परिवर्तन
PARIVARTAN
समेकित ग्रामीण समुदाय विकास हेतु तक्षशिला की पहल

तक्ष शिला

हमार अंगना

अंक 5 | अर्द्धवार्षिक | पूर्व-स्कूल एवं अनौपचारिक शिक्षा पर परिवर्तन के प्रयासों का संकलन, आँगनबाड़ी केन्द्रों के लिए मई

परिवर्तन बालघर आँगन द्वारा प्रकाशित की जाने वाली पत्रिका हमार अंगना के अंक 5 में आपका स्वागत है। आईये संक्षिप्त जानकारी लेते हैं बालघर आँगन और उसकी विभिन्न गतिविधियों के बारे में...।

बालघर आंगन :-

बालघर आँगन परिवर्तन परिसर में शिक्षा की एक छोटी इकाई है, जिसमें आँगनबाड़ी केंद्र से 3 वर्ष से 6 वर्ष तक के नन्हें-मुन्ने,प्यारे बच्चे आते हैं। बच्चों को खेल-खेल के माध्यम से विभिन्य प्रकार की गतिविधियों से अवगत कराया जाता है, जिससे बच्चों का शारीरिक, मानसिक विकास एवं भाषा का विकास हो सके।

संकल्पना एवं उदेश्य:-

बचपन जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है। हमारा बचपन खेल-खेल में ऐसे बीतता है मानो स्वर्ग के सैर सपाटे के लिए निकले हैं। इस उम्र में बच्चे किसी भी काम को खुद से करके, छूकर, देखकर एवं अपने अनुभव के आधार पर सीखते हैं। इन्ही सारी बातों को ध्यान में रखते हुए बालघर आँगन की स्थापना परिवर्तन परिसर में की गयी, जिससे बच्चों

(मछली ने सुनाया समाचार,कहानी)

(प्रार्थना)

(व्यायाम)

का मानसिक विकास, शारीरिक विकास एवं भाषा के विकास के स्तर को और बढ़ाया जा सके। बच्चे 3 वर्ष से 6 वर्ष की उम्र में अपने सीख की दर को और बढ़ाकर मानसिक विकास का परिचय देते है। आज दुनिया के हर क्षेत्र में कुछ नया करने का दौर चल रहा है अर्थात् परिवर्तन का दौर चल रहा है, इसी तरह पठन-पाठन के क्षेत्र में भी परिवर्तन का दौर चल रहा है। इसलिए "परिवर्तन" के बालघर आँगन का भी यही उदेश्य है कि पुराना तरीका छोड़ कर पठन-पाठन के क्षेत्र में परिवर्तन लाया जाए ताकि हमारे बच्चे दुनिया के साथ कदम से कदम मिलाकर चलें, यह हमारा एवं बालघर आँगन का संकल्प है।

इसका नया स्वरुप :-

बच्चों के सम्पूर्ण विकास के उद्देश्य से बालघर आँगन की स्थापना सन 2014 में किया गया। सबसे पहले 2 पंचायतों नरेन्द्रपुर एवं मियां के भटकन में 4 आँगनबाड़ी केन्द्रों के साथ शुरुआत किया गया। चारों केन्द्रों से बच्चे तब पैदल ही आते थे, तब एक ही बाल फसिलिटेटर मधुबाला देवी कार्यरत थीं, बच्चों को लाने एवं ले जाने में आरती एवं प्रियंका का पूरा सहयोग मिलता था। आज बालघर आँगन में दो बाल फसिलिटेटर हैं, ग्राम-बड़हुलिया की मधुबाला देवी एवं ग्राम –गोठी की रिंकू कुमारी। आज के समय में परिवर्तन बालघर आँगन 7 पंचायतों में 43 आंगनबाड़ी केन्द्रों के साथ काम कर रहा है। अब बालघर आँगन दो शिफ्टों में चलता है। परिवर्तन बालघर आँगन अपने निजी वाहन से किसी बालफैसिलिटेटर द्वारा निर्धारित चार आँगनबाड़ी केन्द्रों से पांच-पांच बच्चों अर्थात 20 बच्चों को परिवर्तन बालघर आंगन में लाकर क्लास कराता है एवं विभिन्न गतिविधियों से उन्हें अवगत कराया जाता है। इसी प्रकार दूसरी शिफ्ट में भी अलग-अलग पांच आँगनबाड़ी केन्द्रों से 20 बच्चों को लाकर क्लास कराया जाता है, एवं विभिन्न गतिविधियों से अवगत कराया जाता है। इसके अलावा दूसरे बालफैसिलिटेटर द्वारा प्रत्येक दिन दो निर्धारित आँगनबाड़ी केन्द्रों पर विजिट (भ्रमण) कर क्लास कराया जाता है।

प्रत्येक दिन दो शिफ्ट बालघर आंगन में क्लास एवं प्रत्येक दिन विजिट (भ्रमण) कर के दो आंगनबाड़ी केन्द्रों पर क्लास करवाई जाये, यही इसका नया रूप है।

हमारी गतिविधियाँ

जो गतिविधियाँ हम बालघर आँगन में करते हैं वही गतिविधियाँ विजिट के द्वारा केन्द्रों पर भी होती हैं।

प्रार्थना – बच्चे अपने दिन की शुरुआत करने से पहले प्रार्थना करते हैं। प्रार्थना करने से उनका ध्यान एक बिंदु पे केन्द्रित हो जाता है ताकि उन्हें नवीन उर्जा मिले एवं स्फूर्ति के साथ वे प्रत्येक गतिविधि में शामिल रहें एवं उसे सीख सकें।

व्यायाम – प्रार्थना के बाद नित्य दिन सभी बच्चों को व्यायाम करवाया जाता है इससे बच्चे शारीरिक रूप से तैयार हो जाते हैं एवं खुद को स्वस्थ भी महसूस करने लगते हैं, जिससे अगली गतिविधि में उनका मन अच्छे से लगता है, जैसे जुगुसा, रोलिपोली, राउंड लगाना, गोले में बैठकर चक्की चलाना, पैर से आवाज निकालना, मौन में बैठकर आवाज को सुनना, अंगों को गोल बनाना इत्यादि।

कविता – बच्चे कविता के माध्यम से जो कुछ भी सीखते हैं उसे अपने हाथों से एक्शन के साथ कर के दिखाते हैं, जैसे- हरा समुन्दर गोपी चन्दन। बन्दर पेड़ पर बैठा है। बोल मेरी मछली कितना पानी इत्यादि।

इससे बच्चों के अन्दर का डर ख़त्म होता है एवं वो खूब मजे में इस गतिविधि में हिस्सा लेते हैं।

कहानी – बच्चों को गोले में बैठाकर एक्शन के साथ कहानी सुनायी जाती है, जैसे – बंदर और मगरमच्छ, भालू ने खेला फुटबाल, मछली ने सुनाया समाचार, कौवे के रिश्तेदार, टकलू नमक का नन्हा व्यापारी इत्यादि। बाद में उसी कहानी से कुछ रोचक प्रश्न भी बच्चों से पूछे जाते हैं। इससे बच्चों का ध्यान एक बिंदु पर केन्द्रित होता है एवं उनके याद करने की शक्ति को भी बढ़ाता है।

समूह गतिविधि: समूह में काम करना बहुत ही कठिन काम होता है और विशेषकर बच्चों के लिए तो और भी। यहाँ पर समूह गतिविधि में सभी बच्चे एक साथ 5 का समूह बनाकर- बैठकर, जोड़ो पाईप, आकार परिवार, पासा खेल, बिल्डिंग ब्लॉक जैसी गतिविधियां करते हैं ताकि वे मिलजुलकर एक साथ कार्य करना सीख सकें।

बालगीत – बाल गीत बच्चों से जुड़ा हुआ गीत होता है, जिसको बच्चे खुद गाते हैं एवं अपने अन्दर के डर को दूर करते हैं जैसे ताली हाथ से बजाओ, चीकू-चीकू चाचा, चंदू की नानी कही कहानी, मै तो सो रही थी, आया बसंत, आहा टमाटर बड़ी मजेदार, इत्यादि।

पपेट के संग कहानी – बच्चों को एक साथ बैठा कर पपेट के साथ कहानी का वाचन और प्रदर्शन होता है। पपेट अर्थात कठपुतली कहानी को और भी मजेदार बना देती है जिससे बच्चों का ध्यान बिलकुल ही पपेट के प्रत्येक एक्शन पे केन्द्रित रहता है जिसमें उन्हें काफी मजा भी आता है।

अक्षर की पहचान – इस गतिविधि में कार्ड के साथ अक्षर की पहचान

करायी जाती है, ताकि अक्षर के प्रति उनकी समझ बढ़ सके।

गणित माला – इस गतिविधि में मोती से गिनती करायी जाती है। इससे आसानी से बच्चे खेल- खेल में गिनती, जोड़, घटाव आदि सीख लेते हैं।

ब्लॉक्स के साथ अल्फाबेट की पहचान – इस गतिविधि में कार्ड से अल्फाबेट (अक्षर) की पहचान करायी जाती है एवं अनेक नये आकारों को बनाना सिखाया जाता है।

डाईस खेल :- इस गतिविधि में पासा उछाल कर जितनी संख्या आती है उतनी बार बच्चे उछलते (जम्पिंग) हैं। करते है।

म्यूजिक उपकरण से म्यूजिक सिखाना – बालघर आँगन में एक नया म्यूजिक उपकरण आया है जिसको बजाकर बच्चे खूब आनंदित होते हैं, इसमें बच्चों की पसंद का ड्रम, पियानो, हारमोनियम एवं ढोलक है।

डाक्टर सेट गतिविधि :- इस एक्टिविटी में बच्चा डाक्टर सेट के साथ डाक्टर एवं रोगी की एक्टिंग करते हैं। इस डाक्टर सेट में थर्मामीटर, आला, कैंची, दवा, इंजेक्शन, इत्यादि समाग्री उपलब्ध होती है। इसमें बच्चों को बारी – बारी से हर उपकरण की पहचान करायी जाती है।

इससे बच्चों की समझ एक डॉक्टर और डॉक्टर के काम के प्रति बढ़ती है।

झूला – बच्चों के शारीरिक विकास एवं मनोरंजन के लिए प्रतिदिन झूला झुलाया जाता है। झूला झूलते समय बच्चे बहुत खुश होते हैं तथा उछल – कूद कर के शरीर में फुर्ती लाते हैं।

कार्यशाला का विवरण

परिवर्तन बालघर आँगन, बच्चों के बालघर में क्लास एवं आँगनबाड़ी केंद्र विजिट क्लास के अलावा कुछ महत्वपूर्ण कार्यशालाएँ भी कराता है।

- गुनगुन कार्यशाला
- धमाचौकड़ी कार्यशाला
- नन्हें कदम कार्यशाला
- सेविका प्रशिक्षण कार्यशाला.

1. गुनगुन कार्यशाला – यह कार्यशाला प्रत्येक छह माह पर करायी जाती है अर्थात साल में दो बार होती है। यह कार्यशाला बच्चों के साथ-साथ सेविका के लिए भी बहुत महत्वपूर्ण है। क्योंकि यह कार्यशाला समुदाय के किसी एक आँगनबाड़ी केंद्र पर चार से पांच केन्द्रों के बच्चों को इक्कठा करके होती है। इस कार्यशाला में नई-नई गतिविधियां कराते लोगों को सेविका देखती हैं, सीखती हैं और अपने-अपने केन्द्रों पर कराती हैं। पिछली बार यह कार्यशाला 12-15 फ़रवरी तक नरेन्द्रपुर, भरौली एवं पथार देई आंगनबाड़ी केन्द्रों पर हुई थी जिसमें लगभग 110 बच्चे लाभान्वित हुए थे, साथ ही साथ सेविकाओं और सहायिकाओं ने भी हिस्सा लिया था।

नन्हें कदम कार्यशाला – यह कार्यशाला बच्चों एवं सेविकाओं के साथ–साथ अभिभावक के लिए भी बहुत महत्वपूर्ण है। इस कार्यशाला में अभिभावक भी अनिवार्य रूप से उपस्थित रहते हैं।

इसमें अभिभावक यह देखते हैं कि हमारे बच्चों में कितना बदलाव आया है, वह पहले क्या था अब क्या बन गया है। यह कार्यशाला भी समुदाय के किसी एक आंगनबाड़ी केंद्र पर चार केन्द्रों के बच्चों को इक्कठा कर के करायी जाती है। यह कार्यशाला एक वर्ष में दो बार करायी जाती है, पिछली बार ये कार्यशाला परिवर्तन परिसर में अप्रैल माह में करवायी गयी थी जिसमें कुल 32 अभिभावक एवं 80 बच्चों ने भाग लिया।

धमाचौकड़ी कार्यशाला – यह कार्यशाला परिवर्तन परिसर में दो दिवस की होती है। यह मिश्रित कार्यशाला है। इस कार्यशाला में पुराने बच्चे अर्थात उस आंगनबाड़ी केंद्र के बच्चे जिसके साथ पहले क्लास हो चुकी है तथा वर्तमान आंगनबाड़ी केंद्र के बच्चे जिनके साथ क्लास एवं

टायर ग्राउंड में झूला झूलते बच्चे

नन्हे कदम कार्यशाला में अभिभावक एवं बच्चे

धमा चौकड़ी कार्यशाला

विजिट हो रही है। सभी एक साथ इस कार्यशाला में भाग लेते हैं। पुराने बच्चों की यह एक तरह से परीक्षा भी है कि वह कितनी गतिविधियां याद रख पाए हैं और कितना भूल गए हैं।

सेविका प्रशिक्षण कार्यशाला -यह प्रशिक्षण कार्यशाला भी परिवर्तन बालघर आँगन की एक महत्वपूर्ण कार्यशाला है। यह कार्यशाला केवल सेविकाओं के लिए आयोजित की जाती है। सेविकाओं के प्रशिक्षण के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षित ट्रेनर की टीम पटना डी.पी.एस. से आती है। यह कार्यशाला दो दिवसीय या तीन दिवसीय होती है। यह कार्यशाला प्रत्येक वर्ष दो बार आयोजित की जाती है। इस कार्यशाला में सेविकाओं को नई-नई गतिविधियों से अवगत कराया जाता है, जिसे सीख कर वे अपने- अपने केंद्र पर बच्चों को सिखा सकें। पिछली बार यह प्रशिक्षण 10 मई को किया गया जिसमें 55 सेविकाओं ने भाग लिया।

बच्चो की बातें :-

1. प्रिंस कुमार, ग्राम संथू, मिंटू जी के आंगनबाड़ी केंद्र पर पढने आता है। वह परिवर्तन आता है और बहुत ध्यान लगाकर कविता, कहानी सुनता है और पढ़ता है। सभी एक्टविटी अच्छे से करता है और कहता है कि "जब हम घरे जानी त घर के लोग पुछेला की आज का सिख के अइलहा परिवर्तन से, तनी कविता, कहानी सुनाव तब हम कविता, कहानी सुनायेनी ओरी व्यायामो करके देखावेनी," जब तमिलनाडु के मूर्तिकारों द्वारा मूर्तियां बनायीं जा रही थीं तब वह पूछ रहा था-- मैडम जी इ केकर मूर्ति बनत बा? इ कहवा लागी? एकर पूजा होई का? लोग इहवा पूजा करे आई का?
2. इशांत कुमार, ग्राम नरेन्द्रपुर उमरावती जी के केंद्र पर पढ़ता है। इनके पिता उपेन्द्र सिंह परिवर्तन में काम करते हैं।

(सेविका प्रशिक्षण के दौरान सुपरवाईजर और सेविकाओं के साथ में वंदना जी और रीमा जी)

वह कहता है कि "मैडम जी झूला झुले में बड़ा मजा आवेला, ओरु टायर पर खेले में भी बड़ा मजा आवेला कबो हे टायर पर कुदेनी त कबो हो टायर पर, जब पढ़ के घरे जानी त डैडी जी पूछेले- की आज का पढ़ के आईल ह तनी हमरा के ओरी अपना बाबु के बताव त, तब हम बतावेनी। "

3. जीनत खातून, उम्र 5 वर्ष, ग्राम बाबु के भटकन, वर्षा जी के सेंटर से आती है। जीनत की विशेषता है कि वह बहुत साफ – सुथरी ड्रेस पहन कर आती है और पढ़ने, कविता करने, व्यायाम करने अर्थात सभी एक्टविटी को बहुत अच्छे से करती है। उसकी सेविका वर्षा जी कहती हैं कि जीनत बहुत तेज लड़की है। वह जो एक्टविटी परिवर्तन से सीख कर आती है वह नियमित रूप से यहाँ कराती है। जीनत, समय का बहुत ध्यान रखती है विशेष कर जिस दिन परिवर्तन जाना होता है उस दिन वह बिल्कुल छुट्टी नहीं करती है। वह कहती है कि "जहिया परिवर्तन जाए के होला तहिया हम सवेरही नाहा खा के तैयार हो जानी, काहे की लेट हो जाई त गाड़िया छुट जाई।"

4. शमा खातून, उम्र 5 वर्ष, ग्राम नरेन्द्रपुर, उषा जी के केंद्र से आती है। शमा खातून की स्मरण शक्ति बहुत अधिक है। वह कविता,कहानी बहुत जल्द याद कर लेती है। वह कहती है कि "मैडम जी जवन कहानी, कविता हम दू बार से तीन बार पढ़लेनी त हमरा याद हो जाला, और हम अपना सेंटर पर कविता पढ़ के बाकीकी बच्चा लोग के बतावे नी। "

सेविका की बातें

(1) सेविका का नाम – साधना देवी, केंद्र का नाम – धर्मपुर

साधना जी के केंद्र के साथ क्लास और विजिट 2015 से शुरू हुआ, जब मधुबाला देवी, उनके केंद्र पर क्लास कराती थीं तब वह बहुत ध्यानपूर्वक सभी गतिविधियों को देखती थीं। कुछ दिन बाद साधना जी स्वंय सभी गतिविधियां अच्छी तरह से कराने लगीं, जैसे – कविता, हफ्ते एवं महीने की जानकारी, व्यायाम, प्रार्थना, और पोस्टर बनाकर अपने केंद्र पर लगाना।

साधना जी कहती हैं कि "जब से हम और हमारा केंद्र परिवर्तन से जुड़े हैं तब से केंद्र पर बहुत बदलाव आया है। जो ट्रेनिंग हमको सरकारी संस्था में नहीं दिया जाता वह ट्रेनिंग हमको परिवर्तन

बालघर आँगन के माध्यम से दिया जाता है। परिवर्तन से जुड़ कर मैं बहुत कुछ सीखी हूँ, और हमारे बच्चे भी बहुत कुछ सीखते हैं और बहुत खुश एवं एक्टिव रहते हैं।"

(2) सेविका का नाम – उमरावती सिंह केंद्र का नाम – नरेन्द्रपुर

जब परिवर्तन परिसर में बालघर आँगन की स्थापना हुई तब से ही उमरावती जी का केंद्र बालघर आँगन से जुड़ा हुआ है। शुरू से ही वह केंद्र पर बहुत अच्छा कार्य करती हैं, सभी गतिविधि अपने केंद्र पर कराती हैं तथा अपने केंद्र पर बहुत साफ-सफाई रखती हैं। उनके केंद्र के बच्चे इस साल डा. राजेन्द्र प्रसाद की जयंती पर सिवान गाँधी मैदान में भाग लिए। म्यूजिक के माध्यम पर डांस किये, सभी बच्चों को सरकार की तरफ से सम्मानित किया गया। सन 2014 में जब मैं उमरावती जी के केंद्र पर क्लास करा रही थी तब उसी समय जिरादेई सी.डी.पी.ओ शशि कुमारी जी आयीं और क्लास देखकर बहुत खुश हुईं और उमरावती जी से बोलीं कि आप मधुबाला जी के सहयोग से अपने केंद्र को आदर्श केंद्र बनाईये। परिवर्तन के प्रयास और सी.डी.पी.ओ के सहयोग से धीरे- धीरे बदलाव होना शुरू हुआ, और आज यह आदर्श केंद्र के रूप में जाना जाता है। उमरावती कहती है कि परिवर्तन बालघर आँगन से सीखकर ही हमें इतनी गतिविधियों की जानकारी हुई है जिसके कारण आज हमारा केंद्र आदर्श केंद्र के रूप में जाना जाता है।

(3) सेविका का नाम - सुमन सिंह आंगनबाड़ी केंद्र का नाम – बलिया

सुमन सिंह बहुत ही कर्मठ एवं निष्ठावान सेविका हैं। वह समय का बहुत ध्यान रखती हैं। समय से सेंटर खोलना उनकी प्राथमिकता है। वह कहती हैं कि जब हमारा केंद्र बालघर से जुड़ा तो हमें अजीब सा लगता था। सोचती थी कि अब यह कौन समस्या आ गया, परन्तु जब हमारे केंद्र के बच्चे परिवर्तन बालघर आंगन आने-जाने लगे और केंद्र पर आकर कविता, कहानी, सुनाने लगे, व्यायाम करने लगे तब हमें लगा कि परिवर्तन बालघर आंगन बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिए एक वरदान है और सेविका ट्रेनिंग 'सोने पर सुहागा है। '

अभिभावकों की बातें

1. नाम- हरिओम शर्मा, ग्राम + पोस्ट – करसर, थाना – रधुनाथपुर, जिला – सिवान, पेशा – फिटर थ्योरी इन्सट्रक्टर, सुभाष प्रसाद आई.टी.आई. भरथूईगढ़ जीरादेई, सिवान।

यह कहते हैं कि "जब परिवर्तन परिसर में कृषि मेला लगा था, मैं परिवर्तन में मेला घूमने आया था। चूँकि मैं किसी प्रशिक्षण संस्थान में कार्यरत हूँ, इसलिए परिवर्तन के शिक्षकों से मिलने की जिज्ञासा हुयी। बारी – बारी से मैं जथा संभव लोगों से मिला, इसी क्रम में मुझे मधुबाला जी, रिंकू जी, आरती जी, से मुलाकात हुआ जो लोग परिवर्तन में शिक्षा इकाई में कार्यरत हैं। परिवर्तन के बारे में पूरी जानकारी लिया तो मुझे पता चला की कई जिलों में परिवर्तन जैसा कोई संस्था नहीं है।

जब मैं बालघर आँगन में छोटे-छोटे बच्चों के पढने का व्यवस्था देखा, तो मैं भी मधुबाला जी से अपने भतीजा विरत के लिए बालघर में पढ़ने हेतु बात किया।

मैं प्रतिदिन सुभाष प्रसाद आई.टी.आई. भरथूईगढ़ जीरादेई में पढ़ाने आता हूँ तो विरत को लाकर सुबह 9 बजे परिवर्तन छोड़ देता हूँ और 4 बजे वापस जाते समय लेते जाता हूँ। यह मेरा प्रतिदिन का कार्य है छुट्टी का दिन छोड़ कर। मुझे थोड़ा भी चिंता नहीं होता की बच्चे को कहीं छोड़ कर आया हूँ। "

2. उज्जैन बंगरा का अंकुश बालघर में आता है, उसकी दादी कहती है कि "अंकुश जब से परिवर्तन जाने लगा है तब से उसके अंदर बहुत सुधार आ गया है। वह जो भी कविता, कहानी वहाँ से सीख कर आता है हमलोग को बहुत अच्छा से हिल-डोल कर घूम-घूम सुनाता है और अकेले में भी कविता कहानी पढ़ते रहता है।" अंकुर की दादी कहती है कि "जो आदमी परिवर्तन बनाया है, वह बहुत महान है क्योंकि उसमें शिक्षा के साथ-साथ रोजगार भी है। मैं भी नारी जुटान पर

जाती हूँ जहाँ पर बहुत महिला लोग आती हैं।" वह कहती हैं कि "अमीर लोग के बच्चे तो कहीं भी पढ़ सकते हैं परन्तु गरीब के बच्चों के लिए बालघर आँगन भगवान के आशीर्वाद से कम नहीं है।"

जीरादेई, सी.डी.पी.ओ की बातें - सी.डी.पी.ओ. प्रखंड जीरादेई, परिवर्तन बालघर आंगन के कार्य से बहुत खुश रहती हैं। मैम कहती हैं कि इधर समुदाय में कार्य करने वाली यह पहली गैर सरकारी संस्था है , समुदाय में छोटे-छोटे बच्चों के साथ काम करना बहुत सराहनीय कदम है। आंगनबाड़ी केन्द्रों पर जहाँ तीन साल से छह तक के बच्चे आते हैं, जिन्हें सोचने- समझने एवं कुछ करने की शक्ति बहुत कम होती है, उन्हें बालघर आँगन नये-नये उपकरण एवं नये –नये तरीके के साथ कुछ नया करवाने का निरंतर प्रयास करता है, जो एक सराहनीय कदम है। वो किसी भी समस्या को हल करने के लिए हर समय तत्पर रहती हैं एवं बोलती हैं-"मधुबाला जी आपको आंगनबाड़ी से सम्बंधित जो कुछ भी परेशानी हो मुझे तुरंत बतावें।"

सुपरवाइजर की बातें – "विजिट के दौरान सुपरवाइजर लोग कहीं न कहीं मिल जाती हैं। यदि वह क्लास कराते समय केंद पर मिल गयीं तो वो लोग केंद्र पर पूरा समय देती हैं और हमारे गतिविधियों को बहुत बारीकी से देखती हैं , सेविका लोग से कहती हैं कि आपलोग मधुबाला जी का पूरा साथ दें और मधुबाला जी जो भी गतिविधियां करती हैं उसे रूटीन के तौर पर रोज कराएँ। यदि क्लास के दौरान या विजिट के दौरान कुछ परेशानी, बाधा आती है वो लोग उस बाधा को दूर करती हैं। "

1. बाल फैसिलिटेटर – मधुबाला देवी, ग्राम व पोस्ट बड़हुलिया, "मुझे बालघर आँगन से जुड़े चार वर्ष से ज्यादा हो गया। बच्चों के साथ काम करते-करते, बच्चो के तरह बोलते-बोलते अपना बचपन याद आने लगता है। एक फिल्म का गाना है – 'कोई लौटा दे मेरा बिता हुआ दिन' (फिल्म दूर गगन की छाँव में), वैसे ही लेकिन बीता हुआ समय तो कोई नहीं लौटा सकता परन्तु बालघर आँगन में बच्चों के साथ लगता है कि बचपन लौट आया है। क्योंकि बच्चों के साथ उन्हीं के भाषा में तुतला-तुतला कर बोलना, उन्हीं की तरह इसरार करना, बचपन की याद दिलाता है। बच्चे देश की भविष्य और बालघर आँगन उनका पहला प्लेटफार्म है जहाँ बच्चे ठीक से चलना, बैठना, बोलना, सीखते हैं। इन्हीं सब बातों का ध्यान रख कर हमलोग निरंतर आगे बढ़ते हैं और अपने कर्तव्यों को निष्ठा पूर्वक निभाते हैं। इन बच्चों के साथ इतना लगाव हो जाता है कि कभी किसी कारणवश नहीं आने पर मन नहीं लगता है। किसी कार्यशाला के दौरान कभी बच्चों के अभिभावक से मिलने का मौका मिलता है और इन्हीं सब कार्यो के दौरान सेविका, सहायिका, सी.डी.पी.ओ.और सुपरवाइजर से मिलने का मौका भी मिलता है। बालघर के शुरुआत दिन के बच्चे आज बड़े हो गए हैं, पर आज न मै उन्हें भूली हूँ और न वो मुझे भूले हैं।

2. बाल फैसिलिटेटर – रिंकू कुमारी ग्राम गोठी- "मुझे बालघर आँगन में कार्य करते लगभग 20 महीने से ज्यादा हो गया है। इन बच्चों के साथ 20 महीना कैसे बीत गया पता ही नहीं चला। फिल्म का एक गाना है, 'बचपन हर गम से बेगाना होता है' यह बात हमें यहाँ बालघर में आकर पता चला कि वास्तव में बचपन हर सुख- दुःख से बेगाना होता है। यहाँ बच्चों को सिखाने के साथ खुद को बहुत कुछ सीखने का मौका मिला कि बच्चों के साथ कैसे रहना है, कैसे बात करना है, उन्ही के भाषा में कैसे समझाना है। बच्चों का इसारा भी कुछ अलग – अलग होती है।"